

पात्र-परिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नट, नाटकक निर्देशक ।
२	कंसासुर	दैत्य, मथुराक राजा ।
३	दौवारिक	कंसक द्वारपाल, प्रतीहार ।
४	धात्र'श	नारद मुनि ।
५	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
६	श्रीकृष्ण	परमेश्वर, वसुदेवक पुत्र ।
७	नर्त्ताकगण	नटुआ सभ ।



स्त्री

१	नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२	देवकी	श्रीकृष्णक माए, कंसक बहिनि ।



सुखि श्रीकाम्ति विरचित

॥ श्रीकृष्णजन्म - रहस्य - नाटकम् ॥

सुन्दरक्षणातिदक्ष-खण्डितारिपक्ष-लक्ष-

रक्षित-स्वभक्त-पक्ष-बाहुवहिल-धारिणी ।

हरार्धदेहधारिणी सभक्त-भक्त्यवारिणी

मुनीन्द्रवन्द्यतारिणी सदा तनोतु वो मुदम् ॥१॥

(तमेवार्थं द्रष्टव्यं । मालवरागे गीतम्—१)

जय जय भगवति जय^१ भवसारम् ।

तव^२ पदमेव भजाम उदारम् ॥

कराल—कृत—करवाल—विशाले ।

नव - शशि - भूषित सुललित भाले ॥

समर शमित रिपु निकर कराले ।

चण्ड-मुण्ड खण्डित^३—जयमाले ॥

श्रीकृष्णजन्मरहस्यनाटकक श्लोकार्थ

देवराजक रक्षाकरवा मे अत्यन्त पट, लालो शत्रुक सैन्यके कटवा मे
ओ लालो अपन भक्तगणक रक्षाकरवा मे सिद्ध बाँहिरूपी लक्ष्मीके धारण कएनि-
हारि, महादेवक आधादेह के धारण कएनिहारि, सुन्दर भक्तक कल्याण कए-
निहारि, मुनिराज लोकनिक कृतकृत्य करएवाली भगवती सतत अहाँसभक
आनन्द के बढावथु ॥१॥

(ओही अर्थके पुष्ट करैत छथि । मालवरागमे गीत—१)

हे भगवती ! अहाँक जय हो । अहाँक पद जे सत्सारक सारस्वरूप (तत्त्व)
थिक ओ उधार अछि, तकर हमरा लोकनि भजन करैत छी । अहाँ हाथ मे

१- रक्षितस्वभक्त । २- तमेवार्थं द्रष्टव्यं । ३- जय जयवन्द्ये । ४- तव पद मोर
परम हित सम्बन्ध । ५- खण्डन ।

भुजग विभूषित लोहित—वसने ।
 विकट-दशन लम्बित-वर-रसने ॥
 सजल-जलद इव पूरित - तारे ।
 बहसि कलित शत मणिमय हारे ॥
 सुकवि गणक इह गायति गीतम् ।
 तव चरणे मानसमुपनीतम् ॥

(अपि च श्लोकः)—

विघ्नश्चास्ताऽतिगात्रप्रहरणविषये चण्डमार्तं षडक्षः
 'प्रोद्भूताघ्नजीघ-प्रचरणहर्गने दास्यो दाववह्निः ।
 स्वगन्धीशाद्यधाम-प्रणमितचरणः 'शैववंशाधिहंसः
 स्फूर्जच्चन्द्रावतंसः 'स्वनयन्तु कुशलं विघ्नराजो गणेशः ॥१॥

विशाल तरुभारि रखने छी । अहाँक कपार पर सुन्दर मदीन चन्द्रमा छथि ।
 युद्ध से अहाँ भयायक शत्रुक समूह केँ धावत करैत छी, चण्ड ओ मुण्डकेँ काटि
 विजयक माला पहिरने छी, साँप सँ शोभित लाल वस्त्र पहिरने छी, विकराल
 दाँत ओ तमझल जोहू अछि, पानिभरल मेघ मे तारा सभ जेता भरल रह्य
 तहिना सेधो मणिक हार केँ धारण कएने छी । सुकवि गणक (ज्योतिषी कवि
 लाल) एहि गीतकेँ गबैत छथि ओ अपन मन केँ अहाँक चरण पर समर्पित
 कएने छथि ॥

(आओरो श्लोक) —

विघ्नरूपी गहन अम्हार केँ मारया मे प्रचण्ड सूर्यमण्डल, उत्पन्न भेल
 पापक समूहक गहन प्रचार मे दास्य दावानल (वनक अग्नि), स्वर्गक राजा
 इन्द्र ओ विष्णु सँ पूजित चरणयला, शिवक वंश रूपी समुद्र मे हंसक समान,
 चमकैत चन्द्रपाक गहनावला विघ्नक अधिपति गणेश कुशलदायक शब्द
 करथु ॥२॥

१—प्रोद्भूताघ्नजीघघ्नगहने दावानिधदास्यः । ७—सौरभं साधिवह्निः (?) ।

८—स्वनयन्तु ।

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण : (परिमोऽवलोक्य) अहो ! महद्विलक्षणा रङ्ग-
 भूमिकाऽवलोक्यते । (पुनः स्तौति ।) :—

महाप्रतापशालिनी नृपाधिपालिपालिनी
 स्फुरद्गुणानुरागिका^१, विभाति रङ्गभूमिका ।
 प्रिये ! विधेहि सादरं, तदत्र कीतुकं परं
 महीप-कंस शासिता, सभा मुदेन भासिता ॥३॥

(ततः प्रविश्य नटी वदति ।)

नटी—वन्दानि अञ्जजत्तं^२ । अञ्जजत्त ! एसा संविता^३ आअवह्नि ।
 यधानवेदि अञ्जो । [वन्दे आर्यपुत्रम् । आर्यपुत्र ! एषा संवृत्ता
 आगतास्मि । यद्याजापयति आर्यः ।]

सू०—प्रिये ! एषा कंसमहाराजस्य महती सभा । अत्र निजगुणान् सम्दर्शय ।

^१अष्टपान - प्रवेशकेन नृत्येन राजानमनुरञ्जय—

(नान्दोपद्यक वाद)

सूत्र०—विशेष विस्तार उचित नहि । (बाह्यवर देखि) अहो ! अत्यन्त विल-
 क्षण रङ्गमञ्च देखि पड़ेछ । (फेर स्तुति करैत छथि)—

महान् प्रताप सँ युक्त, राजाधिराजक द्वारा सम्पोषित, प्रकाशित गुणक
 अनुराग भरल ई सादरपरिपद् शोभित भए रहल अछि । तेँ हे प्रिये
 एतए आदरपूर्वक अत्यन्त रोचक अभिनय प्रस्तुत करू, किएक तेँ ई
 राजा कंसक द्वारा शक्ति सभा आनन्द सँ परिपूर्ण अछि ।)

(तखन प्रवेश कए नटी वजैत छथि ।)

नटी—आर्यपुत्र केँ प्रणाम करैत छी । आर्यपुत्र ! इयेह तैयार भए आएछि छी ।
 जे आर्यक ब्राजा हो ।

सूत्र०—प्रिये ! ई कंसमहाराजक पैघ सभा थिक । एतय अपन गुणसभकेँ प्रद-
 शित करू । आठ पावक प्रवेश बला नृत्य सँ राजाकेँ प्रसन्न करूः—

१—गुणानुरागिका । १०—वत्त ! । ११—आअवह्नि य धानवेति । १२—अष्टो ।

(बोहा) —

हमें नट मारिष, तू नटी, कृपि नारद, कंस भूप ।
वसुदेव, देवकी, भरथगण, मोहन ब्रह्मस्वरूप ॥१॥

(ततो नटी नेपथ्ये उवाचैव सकल-मङ्गल-गदा-योजितः १४ गीतं गायति ।)

(नान्दी आसावरी-रागे [गीतसं०—२])

जय [जय मङ्गल] देव विघनेश ।
करिवर मुख दुख हरय गणेश ॥
आपद - तिमिर तरनि - अवतारे ।
१२पातक गहन दहन अश्वकारे ॥
विघ्न मुदित जनि भारत लोले ।
गलित सयत मद लसित कपोले ॥
सुरनायक - मुनि - सेवक चरने ।
निज - मन - जन मत १६कालुख हरने ॥

हम अभिनेता सूत्रधार रह्य, अहाँ नटी, नारद मुनि, राजा कंस,
वसुदेव देवकी, नर्तक सभ ओ ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण ॥१॥

(तखन नटी नेपथ्य मे बीस सभ मङ्गल पद सँ युक्त गीत गवीत छथि) —

(नान्दी आसावरी रागमे गीतसं०—२)

विघनेश = विघ्नक राजा गणेश । करिवरमुख = हाथीक मुँह बला ।
आपद = विपत्तिरूपी अश्वकारक हेतु सूर्यक अवतार । पातक =
गहन पापक हेतु आगि । विघ्न = विघ्न वा विविष्ट घन (मेघ) । भारत
लोले = चञ्चल बायु (विघ्नस्वरूप मेघ केँ उधिराएवा मे) । गलित

१३ - हसौ ।

१४ - पद्यमायोजित । १५ - पातु खगहनवहन । १६ - कलुख ।

बुधि विभूवनपति हम तुअ दासे ।
अनुपल पुरिअ अभिमत आसे ॥
सुकवि गणक भन मुनि उपदेसे
सकल सभा सुभ करय गणेशे ॥

कंसासुर—(आकर्ष्य) अहो ! महद्गुणवाणीव लक्ष्यते ।

(इति श्रुत्वा उपसृत्य नर्तिकाः कथयन्ति ।)

नर्तिकाः—^{१३}जय महाभाग महाराज !

कंसासुर—विलासयुक्त नृत्यं कुरु ।

(नर्तिकास्तथा कुर्वन्ति ।)

(काचित् प्रकुलारविन्दवदना कमपि मनोहरं निजतनुजमुखं दास्यामी-
त्युक्तवती इदानीं नाऽङ्गीकरोति । तत्र कापि सखी तां मधुकर-मालती-
व्याजेन कथयति)

(श्लोक) —

= सतत चञ्चित मद (हाथीक गट्टी) सँ शोषित मालवला । सुरनायक.....

= इन्द्र ओ मुनिसभ चरणक सेवक छथि। निज = अपन भक्त सभक मनक
दुःख हरण करैत छथि ॥

कंसासुर—(मुनि) अहो ! महान् गुण सँ युक्त वाणी जकां बुझाइछ ।

(ई मुनि नर्तकसभ लग जाए कहैत अछि ।)

नर्तकसभ—जय महाभाग महाराज ।

कंसासुर—विलासयुक्त नृत्य करह ।

(नर्तक सभ तहिना करैछ ।)

केओ फुलाएल कमल सन सुँहवाली कोनो पुरुष केँ 'सुन्दर
अपन बेहसँ उत्पन्न सुख देव' ई गद्यमे छल, मुदा एखन नहि स्वी-
कार करैछ, ततए केओ सखी ओकरा भीरा ओ मालतीक जाये
कहैत छैक । श्लोक—)

१७ - यत्नमात्र (?) ।

नो पीतं मधुमेन पङ्कजदले, नो वा कदम्बदुगे
 १८ मारुतं न दृश्यापि वीक्षितमथ प्रीडाभिमाने सति ।
 स्वामेकं बहुचिन्तयन्नुपगस्तन्मैव चेत् तोष्यसे
 कोऽन्यस्तस्य मधुव्रतस्य क्षरणं, कस्त्यदगुणग्राहकः ॥४॥

(श्लोकार्थं गीतम्-३)

मधुकरमनुनय १९ मालति । मनसिज-सुखमपहाय २० ।
 गायति तथ गुण-गौरवमनुपलभल्लिमुखाय २१ ॥
 अवधारय मधुचञ्चलमतनु - मानहृदयेन ।
 ब्रज मधुसूदनमधि खलु, विरहिण मह २२ सरसेन ॥
 अधिवक्ष्यामि रसदायिनि ! सकल-कला-चतुरेषु ।
 २३ गुणवति ! भज भवभूषणसविकार २४ भ्रमरेषु ॥

भौंरा, ने कमलक पत्ती पर आ ने कदम्बक गाले पर
 पराग पिखलक, ने फूलक रस के ओखियो सँ देखलक। उक्त अमि-
 लावा भेला पर केवल तोहरहि बहुत प्रकारे चिन्तन करैत अएलह
 अछि । हे मालती ! ओकरा नै समुष्ट नहि करैत छह तँ ओ मधु-
 व्रत भौंराक आन के क्षरण होयतक आ तोहरो गुणक ग्रहण कएनि-
 हार दोसर के होएतह ? ॥४॥

(श्लोकक अर्थ से गीत-३)

हे मालती ! तौ कामसुख के छोड़ि भौंराके मनावह । ओ हरवम
 तोहर गुण तथा गौरवके सकल सुखक हेतु मगैत छह । अपन देहक मान सँ
 रहित हृदय सँ ओहि मधुक प्रति चञ्चल भौंरा के चिन्हह । एतय ओहि
 विरही मधुसूदनक लग सरसता सँ जाह । हे अधिक रस देवदवाली ! सकल
 कलामे चतुर भ्रमरसभ मे विकार रहित तोहर वशीभूत जे तोहर ई संसारक

१८ - माकन्दस्य । १९ - मधु लब्ध । २० - हाए । २१ - खाए ।
 २२ - विरहिभिर्मह । २३ - गुणमति मज्ज । २४ - सविकारभ्रमरेषु ।

२५ आलोकय तिलशालिनि ! सपदि सदा नयनेन ।
 २६ स्वहृदि निधाय समागममनुसर तं नयनेन ॥
 कुरु विकसितमतिसुन्दरमाननमधिकसुखेन ।
 भवति विलासिनि ! हितमिह गणक-ललित-वचनेन ॥

कयासुरः—(विहस्य शिरःकम्प विधाय) साधु, साधु !!
 (वश्यङ्गुलीयकं गर्शकाय ददाति ।)
 (गर्तकः सादरे गृह्णाति गृहीत्या च प्रचलितः ।)
 (इति निष्कान्ताः सर्वे ।)
 [इति प्रस्तावना]
 (अग्रान्तरे प्रविशति धारंशः)
 (वेशीयरामे गीतम्-४)
 अएलहुँ देवसमाज सँ आज ।
 फंस महीपति मीलन काज ॥

भूषणस्वरूप भ्रमर तकर गभीर हे गुणवती ! तौ जाह । हे तिलवाली ! अट-
 दए अपना हृदयमे ओकरा राखि अपना आँखि सँ देखह ओ ओकरा सज्ज
 समागम ओ वयनक हेतु जाह । अत्यन्त सुन्दर अपन मुँह के सस सँ विक-
 सित करह । हे विलासिनी ! सूक्ति गणकक सुन्दर एहि वचन सँ एतए हित
 होइत छैक ॥

कयासुर—(हँसि मूढी झुलाए) बाह ! बाह !! (नटुआके ओँठी दैत छथि ।)
 (नटुआ आधरपूर्वक लेत अछि ओ लए विद्याभूषण गेल ।)
 (सभ बहार भए गेल ।)

[इति प्रस्तावना]

(एही बीच नारद प्रवेश करैत छथि ।)

(वेशीय राम मे गीत-४)

प्रवेल = उज्जर । उदर = पेट मे । वन्द = वन्दना करैछ । विहिक.....

२५ - आलोकयति शालिनि । २६ - स्वहृदि ।

धधल केस भोकारल गात ।
उदर नदीक सूनल बात ।
नगर झण्ड जे जन बाब ।
ता सओ उषज प्रेम आधार ॥
तीनहुँ भूत के नहि बन्ध ।
बिहिक कुल-पयोनिधि-चन्द ॥
नारद सभ कला बिसराम ।
भनए गणक गुणक धाम ॥

दीवारिकः—(प्रविश्य^{२७}) कः कोश ? (परिक्रम्य) को भवान् ?

धात्रंशः—रे नृल दीवारिक ! त मां जानासि ? अहं ब्रह्मणि नारदः ।

दीवारिकः—(ससम्भ्रमम्) भवतु ! जमो दे । [भगवन् ! नमस्ते ।]

धात्रंशः—^{२८}तवासदृशकलमस्तु । (हस्तुक्त्वा प्रचलितः । ^{२९}कंससुराय दत्तं चाशीर्वादं पश्येत्) —

जटाजूट-मध्ये लसद्देवधारा

^{३०}स्फुरद्धेमवर्णा च मुक्तानुकारा ।

= विघाताक कुलक्षी समुद्र ही उत्पन्न ब्रह्मना बिकहुँ । कला बिसराम = सभ कलाक निवासस्थान ॥

द्वारपाल—(प्रवेशकए) एतए के के अछि ? (दट्ठल) अपने के बिकहुँ ?

नारद—रे भूखे द्वारपाल ! हमरा नहि जनै छै ? हम ब्रह्मणि नारद बिकहुँ ।

द्वार—(हड़बड़ाए) भगवन् ! अहाँकेँ प्रणाम करैत छी ।

नारद—तोहरा अनुग्रह फल होअओ । (ई कहि चलि देलनि । कंससुरकेँ बेल आशीर्वाद पसक द्वारा) —

महादेवक जटाजूटक बीच मे घोषित गङ्गा, चमकैत सोनाक समान तथा मोतीक समान (चन्द्रकला), अङ्ग मे निवास करैत उद्देश्यपूर्णक

२७ = परिक्रम्य (आगू-‘परिक्रम्य’क स्थान से प्रविश्य ।)

२८ = तवासदृश । २९ = कंस-सुर । ३० = स्फुरद्धेमवर्णाञ्च ।

^{३१}भवानीयमुद्दिश्य चाङ्गे वसन्ती

सदा पातु शम्भोः कृपायुक्तदृष्टिः ॥१॥

कंससुरः—(ससम्भ्रमम् अर्घ्यं पादार्घ्यं च कृत्वा^{३२}) मुने ! स्वागतं भवतु ।

धात्रंशः—साम्प्रतं भवदालोकनेन,

अदबुद एक सुनल हमे असुर, मन भेल परम धिरामे ।

देवकि-तनय तह कंस महीपति ! मन्द ! तोहर परिनामे ॥२॥

कंससुरः—(सविस्मयम्) मुने ! तहि कि कर्तव्यम् ?

धात्रंशः—

सावधान भए रहिअ से निक धिक, एखनहि करिअ उपाए ।

नहि तज्यो फेरि पुनु, परत नृपति सुनु, गरुअ पराभव आए ॥३॥

कंससुरः—(स्वगतम्) सम्मगोच्यते । भद्रम् एतस्य प्रकारं करिष्यामि अहम् ।

धात्रंशः—(पुनः कथयति) —

ई भवानी ओ कृपासी युक्त दृष्टि सतत रक्षा करओ ॥१॥

कंससुरः—(हड़बड़ाए मुँह धोवाक जल ओ पएर धोवाक जल उपस्थित करैत) मुने ! अहाँक स्वागत करैत छी ।

नारद—एखन अहाँकेँ देखला सँ,

कोनो अवसर पर हम एक अद्भुत घनटा सुनल जाहि सँ मन स्तब्ध रहि गेल । हे मूर्ख कंस ! देवकीक बेटा सँ तोहर अन्त होएतहु ॥२॥

कंससुरः—(चकित होइत) मुने ! तखन की करवाक चाही ?

नारद—सावधान रहबे नीक, एखनहि प्रतीकार फल । नहि सँ बाद मे बड़ पैघ (गरुअ) दुःख आवि खसत ॥३॥

कंससुरः—(मनहि मन) ठीके कहैत छथि । नीक जकाँ एकर हम प्रतीकार करब ।

३१ = भवानी (नीति ?) मुद्दिश्य । ३२ = कृत्वा प्रोक्तं च ।

सबतह बड़ थिक पिअ [निअ] जीवन, ताहि करिअ अनुमान ।
दिइ भए दए मन, करब तोहर [जत] मन भल देख निदान ॥४॥
कंसासुर—एवम् । अब कः सन्देह ?

नारद-वचन चिन्ति ३३ निअ मानस, कंस कहल इह बात ।
जे जे अपत होएत देवकी काँ, तकर करब हमे घात ॥५॥
धाराणा—(साट्टहासम्) मदभिलषितभेद्योक्तम् । अवश्यं तत् कर्तव्यम् । (इति
निष्क्रान्तः ।)

कंसासुर—(३) सविस्मयमन्तःपुरमागत्य मनस्येव विचार्य क्षणिति बहिर्भूत्वा
प्रतीहारान् आहूय आज्ञापयति) भोः प्रतीहार! देवकी वसुदेवी कारा-
गारं नीत्वा सम्यक्तया रक्षणीयौ ।

प्रतीहार—(३) जं देवो आणवेदि । [महेव आज्ञापयति ।] (इति निष्क्रम्य
प्रचलितः ।)

नारद—(फेर कहैत छथि)—सबसँ पैघ अपन जीवन थिक, तकर विचार करू
तेँ स्थिर भए मन दए अपन परिचारक सभ केँ सतर्क करू, जाहिरी
लचित प्रतीकार भए सकए ॥४॥

कंसासुर—वेस । एहि मे कोन सन्देह ?

नारदक वचन केँ अपना मन मे विचारि कंस कहलनि जे
देवकीकेँ जे जे सन्तान होएतनि तकरा हम मारि देब ॥५॥

नारद—(ठहाका मारि) हमर इच्छा जएह छल सएह कहलहुँ अलि । अवश्य
से करू (बहार भेलाह)

कंसासुर—(विस्मय करैत अपन ड्योढ़ी आबि मनहि मन विचारि सट दए
बाहर भए द्वारपालसभ केँ बजाए आज्ञा देत छथि) हओ द्वारपाल!
देवकी ओ वसुदेव केँ जहल लय जाए नीक जकाँ राखह ।

द्वारपाल—जे सरकार आज्ञा देखि । (बहार भए चल गेल ।)

३३ - चिन्तनीय मानस । ३४ - तविस्मयमन्तः पुरमागत्य मनस्येव विचार्य क्षणिति ।

(एतच्छ्रुत्वा देवकी निःस्वस्य कथयति ।)

(कृष्णा-मालव-रागे गीतम्—५)

३५ भाइ ! कह कि कएल हमे तोर ॥ध्रुवम्॥

तात-मातु मोहि, सोपि देलक तोहि,
पिशुन-वचन होअ भोर ।
एत दिन एह छल, तोहई करह भल,
कृष्णा तेजलहुँ मोर ॥
थिकहुँ होवर, तेहुँ दया कर,
किए बाँधि देल बनिसार ।

तोहर बहिनि भए, ओतहि रहब गए,
एकरो करह विचार ॥
हित अनहित भेल, कुजन कुमति देल,
३६ इ बुझल दिन भेल वाम ।
बिहिक लिखल जे, अबस होएत से,
रहत कथा परिनाम ॥
जाहिह दम हँस, से किए करह कँस,
मोहि नहि सहि दुखभार ।
सुकवि गणक भन, धर धरज मन,
सहनहि तह परकार ॥

(ई सुनि देवकी निःश्वास लए कहैत छथि ।)

(कृष्णा मालव रागमे गीत—५)

तात मातु = बाप माए । सोपि = समर्पित । पिशुन वचन = दुर्जनक वचन
सँ । भोर = अज्ञानी । भल = तोहीँ हित करैत छलहुँ । कृष्णा = दया । बनि-
सार = बन्दीबाला, जेल । हित अनहित = जे हित छल जे हित भए गेल ।
कुजन = दुर्जन । वाम = विपरीत । बिहिक = विधाताक । अबस = अवश्य ।
कथा = दुर्यणक अपवाद । जाहिह = जाहि सँ । सहनहि तह = सहले सँ ॥

३५ - भाइ । ३६ - भाइ कह कह कि कँस मे तोर ।

३७ - ई बुझल । ३८ - वसुदेव-देवकीसभ सभ शासनावाली ।

कंसासुरः—(सक्रोधम्) रे मूढ़ प्रतीहार ! सत्वरं गच्छ ।
(ततः प्रतीहारः सकृदपि वसुदेव-देवकीभ्यां^{३६} समं सासनशाली
प्रति गमनं चकार ।)

इति श्रीश्रीकान्त-विरचितो देवक्याः कंसजनित-विस्मयो
नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(प्रस्तावना)

(पुनर्नेपथ्ये दृढगर्भ-संध्यं यतः हृदया देवकी प्रविश्य निःस्वस्य कथयति)—

(गौडीमालवरागे गीतम्—६)

वसुदेव-देवकी देल परवेश ।

निश्वर सिअर विभु दुसह कलेस ॥

कंसासुर—(क्रोधपूर्वक) रे मूर्ख द्वारपाक ! जल्दी जा ।

(तत्पुनः द्वारपाल दुःखपूर्वक वसुदेव ओ देवकीक संग जेल
यिस बिधा भेल ।)

इति 'श्रीकान्त'क बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्यमे 'देवकीक कंसक द्वारा
आश्चर्यमित होएव' नामक पहिल अङ्क समाप्त भेल ॥

द्वितीय अङ्क

(प्रस्तावना)

(केर नेपथ्य मे छओ गर्भ सौ पीड़ित हृदयवाली देवकी प्रवेश कए
निःश्वास लए कहैत छथि)—

(गौडीमालवरागमे गीत—६)

निश्वर=निगड़ (हथकड़ी) । सिअर=... (अस्पष्ट) । विभु=

निमग्न आपद अवधि पराना ।
अचिर न एहि तओ देखिअ तरान ॥
प्रतय-वेदन सहि होइअ हरान ।
निकरन निक नहि धएल धेआन ॥
सञ्चित गर्भ कएल कत आस ।
उतपति कालहि कएल निरास ॥
सुकवि गणक मन दए एहो भान ।
नारद-ध्वन करिअ अनुमान ॥

(वाग्दंशः पुनरागत्य प्रवेशं नाटयति ।)

वाग्दंशः—(परिक्रम्यावलोक्य च) अहो ! शिव शिव !! कथमियमवस्था ?

देवकी—(ससम्भ्रमं प्रणिपर्य गीतेन कथति)

(कहणा मालव-रागे गीतम्—७)

मुनि हे ! कि हमे करब परकारे ।

बिन्ता-जलधि समन मोर मानस,

कथोन परि होएत सैतारे^{३९} ॥

बिन्ता । कलेस = दुःख । निमग्न = निमग्न (डूबल) । अचिर = जल्दी ।
तरान = रक्षा । निकरन = निर्दय (कंस) । सञ्चित = संचित कए,
पोसि । उतपति = जन्म ॥

(नारद कोरे आवि प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

नारद—(तहलि ओ देखि) अहो ! हाय हाय !! कोना एहत दशा भए गेल ?

देवकी—(हृदयद्वारे प्रणामक हेतु खसि गीतद्वारा कहैत छथि) —

(कहणा मालवराग मे गीत—७)

परकारे = उपाय । बिन्ता-जलधि = बिन्ताखली समुद्र मे हमर मन डूबल

जुग सभ आभिनि कठिन गुमाविअ,
 के जन कएल कत पाये ।
 एहनि करमहिनि हमे सनि के सनि,
 जे सह एतेक सन्तापे ॥
 तोहे नारद मुनि, हमे निरविश मुनि,
 कहिअ तेहन उपदेश ।
 जाहि सह सँहरिअ अचिर दुगह दुख,
 न रह कलेसक लेखे ॥
 दूषण बीनु हमरि एहु दुर्गति,
 कतेक सहब दुखभारे ।
 *तनय-हरन सह मरन नोक थिक,
 *ह बुझि करिअ परकारे ॥
 मुकवि मणक भन, धर धरज मन,
 सब दिन न रह समाने ।
 नारद-वचन धरिअ गुन-मानस,
 जे भल देखत निदाने ॥

धार्मिक—देवकी ! मा सीध । सहान् उपायोडिति । तच्छृणु—

अछि । सँतारे = उद्धार । आभिनि = राति । के जन = गर्भ में कौन पापी
 व्यक्ति अछि । करमहिनि = अभायलि । निरविश = असहाय । सँहरिअ
 = पार होइ । अचिर = जल्दी । कलेसक लेखे = दुःखक लेखी नहि रहए।
 दूषण बीनु = विनु दोषे । तनय-हरन सह = पुत्रक हरण सँ । निदाने =
 उचित प्रतीकार ॥

नारद—देवकी ! दुख अनु करो । एकर पैघ उपाय अछि । से सुनु—

४० - तनय हरन सह मरन न नोक थिक । ४१ - ई बुझि ।

कहल नारद देवकी सुनु, आन नहि परकार ओ ।
 धरह दुइ हरिचरण सरण, सँतार तेहि दुखभार ओ ॥६॥

(इत्युक्त्वा प्रचलितः ।)

(प्रस्तावना समाप्त)

(ततो वसुदेवो देवकी च हृदि विगृह्य हरिचिन्तने चित्तं निवेश्य गीतेन
 कथयतिः ४२ ।)

(आशावरी-रागे गीतम्--८)

मन अनुचिन्त देवकि वसुदेव ।
 दूइतर भगति दामोदर सेव ॥
 दुख सागर सँ करिअ उद्धार ।
 तोहे मन जगतक कछोग कड़हार ॥
 परल पराभाव रचिअ उपाए ।
 चिन्तामनि अनुगत चित लाए ॥
 कथनाथ जनु होइअ भोर ।
 सब तेजि सरण धएल हमे तोर ॥
 जातक-हरन सहल नहि जाए ।
 देखि दुख दरबार होइअ लहाए ॥

हे देवकी ! दोसर उपाय नहि अछि । अहाँ कृष्णक चरणकेँ कसिकए
 गह, जे दुःखक भार सँ पार करत ॥६॥

(ई कहि चलि गेलनि ।)

(प्रस्तावना समाप्त)

(तबन वसुदेव ओ देवकी मन में विचारि श्रीकृष्णक चिन्तन में मनको
 लगाए गीतक द्वारा कहैत छथि)—

(आशावरी-रागमे गीत--८)

अनुचिन्त = व्याप्त करैत छथि । दूइतर = अधिक निश्चित रूपेँ । दामो-
 दर = कृष्णक । कड़हार = कष्टघार, खेवेया । पराभाव = दुःख में । चिन्ता-

४२ - कथयति ।

सुकवि गणक मन दए एही माव ।
भगति जगत गति के नहि पाव ॥
(ततः श्रीकृष्णः कुरुष्या मरुदरथः समागतः ।)

(देशाक्ष-रागे गीतम्-६)

देल मरुडासन प्रभु परथेसे ।
अगत भगत—जन मूनि कलेसे ।।
पीत वसन तनु उपज निनेहे ।
सजल जलद जनि वामिनि रेहे ॥
करतल बाँध एहन सन भासे ।
पङ्कज पर इन्दु कएल निवासे ॥
पदम पानि देखि होअ मन भागे ।
पङ्कज सौं पङ्कज निरमान ॥
सुकवि गणक नहि संशय आने ।
हिनि सह अचिरहि होएत तराने ॥

(ततो देवकी माधवमवलोक्य प्रदक्षिणं कृत्वा प्रोक्तवती ।)

देवकी—भो ! अलोक्यताथ ! मयि^{४४} प्रसीद । ताभ्यः प्रकारः ।

मनि = चिन्ता सौ भारल । अनुगत = भक्त । श्रीर = अज्ञानी । जति कहरन
= पुत्रक हरण । दरवरि = भटपट ॥

(तखन श्रीकृष्ण दयापूर्वक मरुद पर बहल आवि गेलाह ।)

(देशाक्ष-राग मे गीत—६)

मरुडासन = कुष्ण । पीत वसन = पीयर वस्त्र । सजल = =
पानि सौं भरल मेघ मे जेना निजलोकाक रेखा रहए । इन्दु = चन्द्रमा ।
पदम = कमल । पानि = हाथ मे । पङ्कज = कमल सौं कमल बहराएत हो । हिनि
सह = हिनकहि सौं । अचिरहि = अविलम्ब । तराने = रक्षा ॥

(तखन देवकी कृष्णके देखि प्रदक्षिण कए कहलथिन) —

देवकी—हे तीनूलोकक माधिक ! हमरा पर प्रसन्न होउ । दोसर उपाय नहि
अछि ।

(तेनाऽनन्तरं नारायणेनोक्तं पद्येन^{४५} ।)

श्रीकृष्णः—

मातः ! लेदमवाकुरु प्रतिपलं भक्तिचिन्तने सादरं
चेतस्य विनिधौहि द्वासनगृहे^{४६} दीपास्त्वमङ्गीकुरु ।
^{४७}यावत् त्वज्जठरे विशामि शनकैः प्रोदधूय न^{४८}शालयं
मीरवा शैलवगाचरामि सहसा कंसाधमोत्सारणम् ॥६॥

(इति श्रुत्वा देवकी साश्रु कथयति ।)

देवकी—प्रभो ! मज्जठरे निवास कवा करिष्यसि ?

श्रीकृष्णः—(विहस्य मद्येन) मातः ! तव गर्भतो बलभद्रावतारोऽहमेव प्रथमं
योगनिद्रावपदेशेन रोहिणी-गर्भमाविशन् सङ्कूर्पणपदमालम्ब्य^{४९},
ततोऽहमे गर्भे अहमप्यागमिष्यामीति । इति सत्यं जानीहि ।
चिन्तां दूरीकृत्य तावत् करारां वासमङ्गीकुरु । (इति निष्क्रान्तः)।
(तच्छ्रुत्वा देवकी समुलसितहृदया तूष्णीं बभूव ।)

(तखन श्रीकृष्ण पद्यद्वारा कहलथिन ।)

श्रीकृष्ण—हे माए ! अहाँ दुख दूर कर, हरदम आदरपूर्वक हमर चिन्तन मे
मनके लगौओ एहि जहल मे राति सभ के विताउ यावत् धरि
हम अहाँक पेटमे पैसीत छी, उत्पन्न भए नवक घर जाए, बचपन
बिताए सहसा पापी कंसक ताश करैत छी ॥६॥

(ई सुनि देवकी आश्चर्य भए कहैत छथि ।)

देवकी—हे प्रभ ! अहाँ हमरा पेट मे कहिआ निवास करव ?

श्रीकृष्ण—(हँसि गद्यक द्वारा) हे माए ! अहाँक गर्भ सौं बलभद्रक अवतार लए
हमही पहिने योगनिद्राक आजे^{५०} रोहिणीक गर्भ मे पैसि सङ्कूर्पण
कहाए, तखन आठम गर्भ मे स्वर्ग हम आएव । ई सत्य जानू । चिन्ता
दूर कए तावत् जहल मे माम कर । (बहार भए गेलाह ।)

(ई सुनि देवकी उल्लामयुक्त हृदय भए चुप भए गेलीह ।)

^{४४}—पद्येन कथयति । ^{४५}—दीपस्तम्भ । ^{४६}—त्वज्जठरे वा (?) विशामि । ^{४७}—
पञ्चालम्ब्य ।

(अथ छन्दः)

भगति रति मति, कएल दृढ़ गति, हरिचरण धरि आस ओ ।
 लेल सारङ्गगानि मन गुनि, आए गर्भ निवास ओ ॥
 *छुटल चिन्ता छीत-तनुगत जुटल हृदय हुलास ओ ।
 *गर्भ समुचित भइए किछु दिन, पुरल पुरन मास ओ ॥७॥

(अथ गीतम्-१०)

भगति कएल दृढ़ जाने ।
 मन बुझि रति नहि आने ॥
 बाइल मानस आसे ।
 हरि लेल गर्भ-निवासे ॥
 पसरल हृदय हुलासे ।
 पुरल पुरन मासे ॥
 नभस सुदीवस भेला ।
 देवकि वेदत लेला ॥
 सुकवि गणक इह भाने ।
 तखनुक समय बखाने ॥

(छन्दः)

रति = अनुश्रव । दृढ़ गति = स्थिर रीति । सारंगगानि = श्रीकृष्ण ।
 छीत-तनुगत = दुर्बल शरीर मे स्थित । हुलास = उल्लास । पुरन
 = पूर्ण ॥७॥

(गीतम्-१०)

हरि = कृष्ण । पुरनमासे = पूर्णमास, दशम मास । नभस सुदीवस =
 वरसातक सुन्दर दिन । वेदत = प्रसववेदना ॥

४८-छुटल छिन छीत तनुगत । ४९-सगर्भ ।

(अथ प्रसवकाल-वर्णनम्)

निबिड़ नभ सँवट्ट मुत घन, घोर गरज सदव्य ओ ।
 दलित दलित अँधार* चहुँदिस, तलित दपि तरण ओ ॥
 झिझुर शिल्ली रव विभीषम, अधिक दादुल सोर ओ ।
 वास इतहु न घोर संवर, मोर शब्द अनोर ओ ॥८॥

(अथ गीतम्-११)

नभ गरजए घन घोरे ।
 मोरक शब्द अनोरे ॥
 रइनि महा भर भीमा ।
 आदि अँधारक सीमा ॥
 वरिसए वारिद धारा ।
 एहि पूरित महि सारा ॥
 भेक झिगुर कर गाने ।
 योगिनि - निकर भयाने ॥
 सुकवि गणक इह गाई ।
 एहि अवतारल कन्हौई ॥

(प्रसवकालक वर्णन)

निबिड़ = सघन । नभ = आकाश मे । सँवट्ट = टवकर । घन = मेघ ।
 घोर = अतिशय । सदव्य = दर्प सहित । दलित = सहित । दलित =
 पसरल । तलित = विजलोका । रव = शब्द । विभीषम = भयानक ।
 दादुल = थैङ । वास = वरे । मोर शब्द = मयूर बजैछ । अनोर =
 अनुपम ॥८॥

(गीत-११)

नभ = आकाश मे । रइनि = राति । भीमा = भयानक । वारिद =
 मेघ । महिसारा = सम्पूर्ण पृथ्वी । भेक = थैङ । योगिनिकर = योगि-
 नीक समूह ॥

४९-अँधार

(अश्वत्थिकालवर्णनम्)

योग शोभन रोहिणीयुत, लग्न उत्तम कर्क ओ ।
 ११ ताहु^१ सुरगुरु, स्वगृह शशधर, चार दोसर अर्क ओ ॥
 मास नभ—वसु तीथि अष्टमि, कुण्णपक्ष विशाल ओ ।
 देवकी का तनय भए अवतरल श्रीगोपाल ओ ॥१॥

(अथ गीतम्—१२)

हरि हेरि दुख दुरि गेला ।
 पुलकित मानस भेला ॥
 १२ फुजल वन्धन दड़ डोरे ।
 मन्दिर भेल डोरे^{१३} ॥
 कर जोरि कहलन्हि जाई ।
 समरिअ सख मथाई ॥
 जानि पाओते जओ^{१४} तोही ।
 धाओत अरि निरमोही ॥
 करे^{१५} गहि अङ्कम लेला ।
 साहस परिनत भेला ॥
 सुकवि गणक इह भाने ।
 हिन छडि गति नहि आने ॥

(आश्वत्थिकालक वर्णन)

शोभन = शोभन नामक योग । रोहिणी नक्षत्र सँ युक्त । सुरगुरु = बृह-
 स्पति । स्वगृह = अपना घर में (कुण्डली में निधिरित घर में) । शश-
 धर = चन्द्रमा । चार = सूर्य । दोसर = सूर्य । नभवसु = वायु । ॥१॥

(गीत—१२)

हेरि = देखि । पुलकित = प्रसन्न । दड़ डोरे = मजबूत डोरी । मन्दिर
 = घर । समरिअ = समूह । मथाई = कुण्ठा । अरि = शत्रु । करे =
 हाथ से । अङ्कम = कोरा में । साहस = वरसाह ॥

११—ताहु^१ सुरगुरु, स्वगृह शशधर । १२—फुजल । १३—डोरे ।

श्रीकृष्णः—(एतच्छ्रुत्वा स्थलपर्यटनं अकार ।) ओत^१ च लभते । मां
 नीत्वा नन्दालये संस्थाप्य, कम्बका गृहीत्वा सानुसारमागच्छ ।

(वसुदेवतया करोति ।)

आर धरि हरि कएल कर पर, पुरल अधिक ११ जलोच ओ ।
 ११ अवर अहिपति शीम पसरल, न होअ तनु जलजोग ओ ॥१०॥

(अथ गीतम्—१३)

बुलले पाओल दुआरे ।
 सएत मगत प्रतिहारे ॥
 तपन—सुता भेलि आहे ।
 १२ पसर गहन निरवाहे ॥
 कले^१ धले^२ हरि धरि देला ।
 तसु तनया गहि लेला ॥
 १३ ककरह नहि भेल जाने ।
 वसुदेव कएल पमाने ॥

श्रीकृष्ण—(ई सुनि अपन रूप समेटि लेल) जे हम कहने छलहुं, से आव अहाँ
 पावि रहल छी । हमरा लए कम्ब घर में राखि, ओतए सँ कन्या
 लए हमर कहलक अनुसारे जावि जाउ ।

(वसुदेव तहिना करैत छथि ।)

कुण्ठके^१ थार में राखि, हाथ में लए विदा भेलाह, अश्वत्थिक में
 उमड़ि आएल, ऊपर में वेपनाम अपन कण पसारि देल, ते^२ वर्षाक
 जलक सगरी तक नहि भेलनि ॥१॥

(गीत—१३)

सएत = सुतवा में । प्रतिहारे = द्वारपाल । तपन सुता = वसुता । निर-
 वाहे = मेघ । तसु तनया = हुनक पुत्रीके^३ । पमाने = पन्थान । देखिहि

१४ - जेभोन (?) । १५ - अर अहिपति । १६ - पसरल । १७ - ककरह ।

देवकि देखिह देला ।
मुदित मानस [तब] भेला ।
पसरल सेह परिपाटे ।
मुन्दित भेल कपाटे ॥
रोदन मन अनुमानी ।
जामल जामिनि जानी ॥
सुकवि गणक इह भाते ।
परिनत भेल खेआने ॥

(अथ छन्दः)

वाए रक्षक पाट लाओल, सुनिअ प्रभु नवराज ओ ।
देवकी गृह शिशुक रोदन सुनल अछि हुमे आज ओ ॥११॥
(इति श्रुत्वा कंसासुरः सोल्लासम्^{५८} उक्तवान् ।)
कंसासुरः—तहि सिद्धं नः समीहितम् । (इति^{५९} सन्मभूमम् उन्वाय प्रव-
लितः ।)

(अथ छन्दः)

गमन-भर भूषण्ड^{६०}-मण्डल, डोल भूधर गात ओ ।
भेल अति निर्वात चौदिध, होत उल्कापात ओ ॥

= देवीरूपा कस्या । पसरल = पुर्यवत् सभ किछु पसरिगेल । मुन्दित =
बन्ध । कपाट = केवाड़ । जामिनि जानी = गहकदार ।

रक्षक दीड़ राजद्वार पहुँचल ओ बाजल—हे राजा ! देवकीक घर मे
आइ हम बच्चाक कानब सुनल अछि ॥११॥

(ई सुनि कंस उल्लासपूर्वक बजलाह ।)

कंस—तखन त हमरा लोकनिक अभीष्टे सिद्ध भए गेल । (हरवड़ाए ऊठि बलि
देनि ।)

(छन्दः)

गमन-भर = चलवाक भार सँ । भूधर गात = गहाड़क अङ्ग । निर्वात

५८ - सोल्लासः उक्तं च तद्दि । ५९ - स सन्मभूमोन्वाय । ६० - भूषण्ड मण्डल ।

मोद मत सरारि अतिबल, रोसे^{६१} बलु पथ घाए ओ ।
दर्व दपित कंस निर्दय, देवकी-गृह जाए ओ ॥१२॥

(देवकी ससम्भ्रमम् उन्वाय कंसासुरचरणे प्रणिपत्य गोतेन कथयति -)

(गीतम्-१४)

हे दादा ! न करहु मोर निदाने ॥ध्रु०॥

जतन आस जत अङ्कुर अङ्कुरल
भँगलहु लाए पधाने ।
कि हमे कएल सीर^{६२}, जम सम तोहें मोर,
कंस ! तेजहु अजाने ॥
सन्तति हरन सहन^{६३} के कर बर,
हमर अवस अवसाने ।
हमहि सत्ताए कओन फल पओवहु,
तनय देह बन दाने ॥
हित भए अरि सरि, काज करहु करि,
पिछुन-बचन अनुमाने ।
जेहु लिखल रहत सकर फल पाविअ,
सगर जगत एह जाने ॥

= भूकम्प । मोदमत्त = आनन्दे चूर । सरारि = दैत्य कंस । रोसे =
क्रोध सँ । दर्व दपित = घमण्ड सँ भरल ॥१२॥

(देवकी हरवड़ाए ऊठि कंसासुरक पाए पर खसि गीतक द्वारा कहैत
छथि -)

गीत-१४

दादा = भाए । निदाने = दुर्गति । जतन आस = घरन ओ आशा सँ । भँग-
लहु = फोड़लहु ; पधाने = पावर पर । जम सम = समराजक समान । सन्तति-
हरण = सन्तानक हरण । अवस = निश्चय । अवसाने = अन्त, मृत्यु । अरि सरि

६१ - सीहर । ६२ - सहन के ।

जातक-शोक जेहन जननी काँ,
ताहि करय अनुमाने ।
अवने अओँ उनमाद भरल छह,
पूछि देखइ वर आने ॥
माया मोह तोहँ सभ तेजलह,
ठामहि रहत गुमाने ।
१३ निरदय हिरदय उपज दया नहि,
सुकवि गणक इह आने ॥
(तथापि कंसामुरा सन्तोष प्रचलितः ।)

(अथ गीतम् — १५)

कंस भवन धरि गेला ।
सभ मन शक्ति भेला ॥
भद मातल अगेआनी ।
करतल छएल भवानी ॥
१४ शठ अलोपल तेजि पानी ।
सुनल गगन निरवानी ॥
कि करह कंस गुमाने ।
भेल आन सँ आने ॥
से अवतरलह आजे ।
जे करत तोहँ इलाजे ॥

= शत्रुक सद्दश । पिष्टुन = चंगला, दुष्ट । जातकशोक = पुत्रशोक । उनमाद
= मानसिक असन्तुलन । हिरदय = हृदय मे ।

(तयो कंसामुरा कोवपुत्रक चलि देलनि ।)

(गीत—१५)

अगेआनी = अज्ञानी । करतल = हाथ मे । भवानी = यशोदाक पुत्ररूप
भगवतीके । शठ अलोपल = तुरत युक्त भेलीहि भगवती । तेजि पानी = कंसक

६३ • निरदय हृदय तेअओ दया नहि । ६४ • हृद

मुड़ विकल सुनि भेला ।
लाज लम्बित फिरि गेला ॥
अनुचित कएल निचारे ।
बिहि सओँ नहि परकारे ॥
गणक भनए मन लाई ।
नन्द—घर बाजु बधाई ॥

(नन्दालये यशोदा-किशोरमालोक्य गोप ज्ञाना समुल्लसित-हृदया गीतेन
कथयति—)

सोहर गीतम् — १६

पद—१ • हरि यदुनाय यशोमति, अञ्जुम लाओल रे ।
ललना, जनि पथ पड़ल परसमनि, निरधन पाओल रे ॥
छन्द— घन पाए निरधन, मगन मन, आनन्द उर १५ न समाए ओ ।
कए हरख मन, गन्धर्व-गन, अवतरओ यदुवर जाय ओ ॥
पद—२ • पय लए तोरित यशोमति, तनय नहाओल रे ।
ललना, सुनि नन्द दगरिनि सहित, घाए गृह आएल रे ॥

हाथ सँ छुटिके । गगन निरवानी = आकाशवाणी । इलाजे = प्रतीकार । मुड़
= मूर्ख कंस । बिहि सओँ = । । सँ ॥

(नन्दक घर मे यशोदाक पुत्रके देखि गोपीसभ उत्साह सँ भरल हृदय-
वाली गीतक द्वारा कहैत छथि—)

(सोहर गीत—१६)

पद—१ • यदुवंशक नाथ श्रीकृष्णके यशोदा कीर मे लेलनि, जेना बाट पथ
पड़ल स्पर्शमणिके निर्धन व्यक्ति पाबि गेल हो । उर = छाती मे ।
गन्धर्व = देवताक नायक ।
पद—२ • पय = दूध । तनय = पुत्र । दगरिनि = चमेनि । यदुवंशक्षीरसमुद्र =
यदुवंशकपी दूधक समुद्र सँ ।

६५ • उर समाए ।

छन्द — गृह आए नन्द आनन्द सोल ११ सुत, मोहि आनन्दकन्द ओ ।
 यदुवंश-धीरसमुद्ग सखी जनि, प्रकट दोसर चन्द ओ ॥
 पद-३ - नार-छिनाउनि दगरिनि, पाओल मोहर रे ।
 ललना, जुगे जुगे जावओ यशोमति, बालक सोहर रे ॥
 छन्द — तोहर यशोमति तनय अनुपम, देखिअ जनुकुलराज ओ ।
 अति उधव धाय हुलास गोकुल, द्वार दुन्दुभि बाज ओ ॥
 पद-४ - सुर नर मुनिगन हरखित, जय जय शब्द भयो रे ।
 ललना, कंसदलन कह नन्द-धर हरि अवतार लयो रे ॥
 छन्द — अवतार लए हरि हरओ दारिद, दुःख शोक सन्ताप ओ ।
 १० उतपन्न भए उद्योग कए प्रभ, चौदिग बलित प्रताप ओ ॥
 पद-५ - घर घर खलिनि-गन मिलि, सोहर गाओल रे ।
 ललना, हय गज मनि मानि पट नट भट पाओल रे ॥
 छन्द — पट पाए नट भट कोटि कीन्हो, लक्ष लक्ष सुपक्ष ओ ।
 नन्दक याचक जगत दाखि, दारि कीन्हो दक्ष ओ ॥
 पद-६ - कोटि कोटि याचक-जन, १० आओर मुनिगन रे ।
 ललना, शुभ शुभ शुभ धुनि सोहर सुकवि लाल भन रे ॥
 छन्द — भन लाल कहए बेहाल गोकुल, सोल सकल सनाथ ओ ।
 तुअ तुझ पुण्य प्रसाद बालक, भेल बिभवन-नाथ ओ ॥

पद-३ - नार-छिनाउनि = धाँचाक डोहीक ताल कटनिहारि । मोहर = टाका ।
 अनुपम = अनुलनीय । दुन्दुभि = बाजा ।
 पद-४ - सुर नर = देवता ओ मनुष्य । शब्द = शब्द । कंसदलन = कंसके
 मारनिहार । हरि = कृष्ण । दारिद = गरीबी । उतपन्न भए =
 जन्म लए । चौदिग बलित = चारु दिस चमकैत ।
 पद-५ - हय = घोड़ा । गज = हाथी । पट = वस्त्र । नट भट = नट आ ओ
 वीर सभ । याचक = मङ्गनिहारक दरिद्रता के दूर करवा भे पट ।
 पद-६ - बेहाल = आनन्दमग्न । तुझ पुण्य प्रसाद = अतिशय पुण्यक कृपा सँ ।

६६ - श्री सुत । ६७ - ललना उरवत भए उद्योग कए चौदिगावलित प्रताप ओ ।
 ६८ - श्री मुनिगन रे ।

(द्वितीय-सोहर-गीतम् - १७)

११ निज जन गन सुभकारक, गोकुल-सारक रे ।
 जनमल जगत उधारक, १० अर प्रतापालक रे ॥ ललना ध्रुवा ॥
 नन्द-धर उधव धाय, सभ मिलि गावए रे ।
 ब्रजराजी शुभ गावए, लाखनि पावए रे ॥
 नट भट पट कर करखित, सुर ११ नर हरखित रे ।
 महुकुल होअ कुल बरखित, अति आमरखित रे ॥
 बाज नन्दक पुर छाजए, बहुदिस १२ जय जय रे ।
 यशोमति कोर हरि १३ राजए, दुन्दुभि बाजए रे ॥
 हरि हेरि यशोमति मन जनि, पाओल परसमनि रे ।
 सुकवि लाल कह १४ रभसनि, निजपति देखबनि रे ॥

येनेन्द्रादि-समस्त-देवताणाः सन्तोषिताः सन्निवा,
 १० यो गोवर्द्धन-धारको ।

११ नन्दानन्द-विवर्धनो मधुरिपु १२ देवाच्छिबं श्रेयसे ॥ १३ ॥

(द्वितीय सोहर गीत - १७)

निजजन गन = अपना लोक सभक । सारक = उधार कएनिहार । पट =
 वीर । पट कर करखित = वस्त्रके हाथसँ बिचलन (पओलनि) । सुर = देवता ।
 आमरखित = आनन्दमग्न । राजए = शोभित होइत छथि । दुन्दुभि = बाजा ।
 परसमनि = स्वसमनि (पारस) । रभसनि = शोभता सँ ॥

जे सखिन इन्द्र आदि देवतालोकनिके सन्तुष्ट कएल, जे गोवर्द्धन पर्वत
 के धारण कएल,
 नन्दगोपक आनन्दके बहओनिहार, मधुदैत्यक शत्रु (भगवान् कृष्ण) अहाँलो-
 कनिक अभ्युदयक हेतु कल्याण देख ॥ १३ ॥

६९ - निज जन गन सभकार गोकुल । ७० - उधार करिअ प्रतिपालक रे ।
 ७१ - सुर नर मुनि हरखित रे । ७२ - बहुदिस जय रे । ७३ - हरि राज । ७४ -
 रभस निज पति । ७५ - श्री । ७६ - (रिक्त स्थान नहि छोड़ल अछि ओ अगिला
 पंक्ति ७७ - इलोक ब्रह्म गेल अछि ।) ७७ - रिपुच्छायाच्छिबं ।

(अमङ्गल-निवारणार्थं पूतना-शकट-यमार्जुन-केशी-काली-कुवल-
यापीड-चाणूर-मुष्टिक-प्रभृति-कांसवधोऽ^० सन्दर्शितः ।)

रचितं जन्मरहस्यं गणकाधिपेन रामरसिकेन ।

भवतु सुखाय जनानां सदसि सदा नृत्यकालेषु ॥८॥

इति श्री झड्डला प्रसिद्ध श्रीकान्त-विरचितं श्रीकृष्णजन्मरहस्यं

समाप्तम् ॥

(अमङ्गल रौ वचएवाक हेतु पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन, केशी, काली-
नाग, कुवलयापीड हाथी, चाणूर पहलमान, मुष्टिक पहलमान इत्यादि सहित
कांसक वध नहि देखाओल गेल ।)

महान् ज्योतिषी (गणकाधिप), भगवान् रामक रसिक एहि जन्मरहस्यक
रचना कएल । ई कृति सभा मे नृत्यक समय मे सतत लोकसभक सुखक हेतु
रहओ ॥८॥

इति श्रीझड्डला प्रसिद्ध श्रीकान्तक वनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्य

नाटक समाप्त भेल ॥

७८ • वधो समुच्छिता ।

